अध्याय-9

प्रथम साम्राज्य

सुरेश अपनी माँ के साथ गणतंत्र दिवस की परेड देखने पटना के गाँधी मैदान में आया। कुछ ही देर में निर्धारित समय पर विभिन्न झाँकियों के सुन्दर दृश्य सामने से गुजरने लगा ऐसी ही एक झाँकी थी जिसपर लिखा था **'मगध साम्राज्य का महान् सम्राट अशोक'।**

अध्याय 7 में आप लोगों ने सोलह महाजनपदों के बारे में पढ़ा है। ये सारे महाजनपद

मौर्य साम्राज्य के मानचित्र
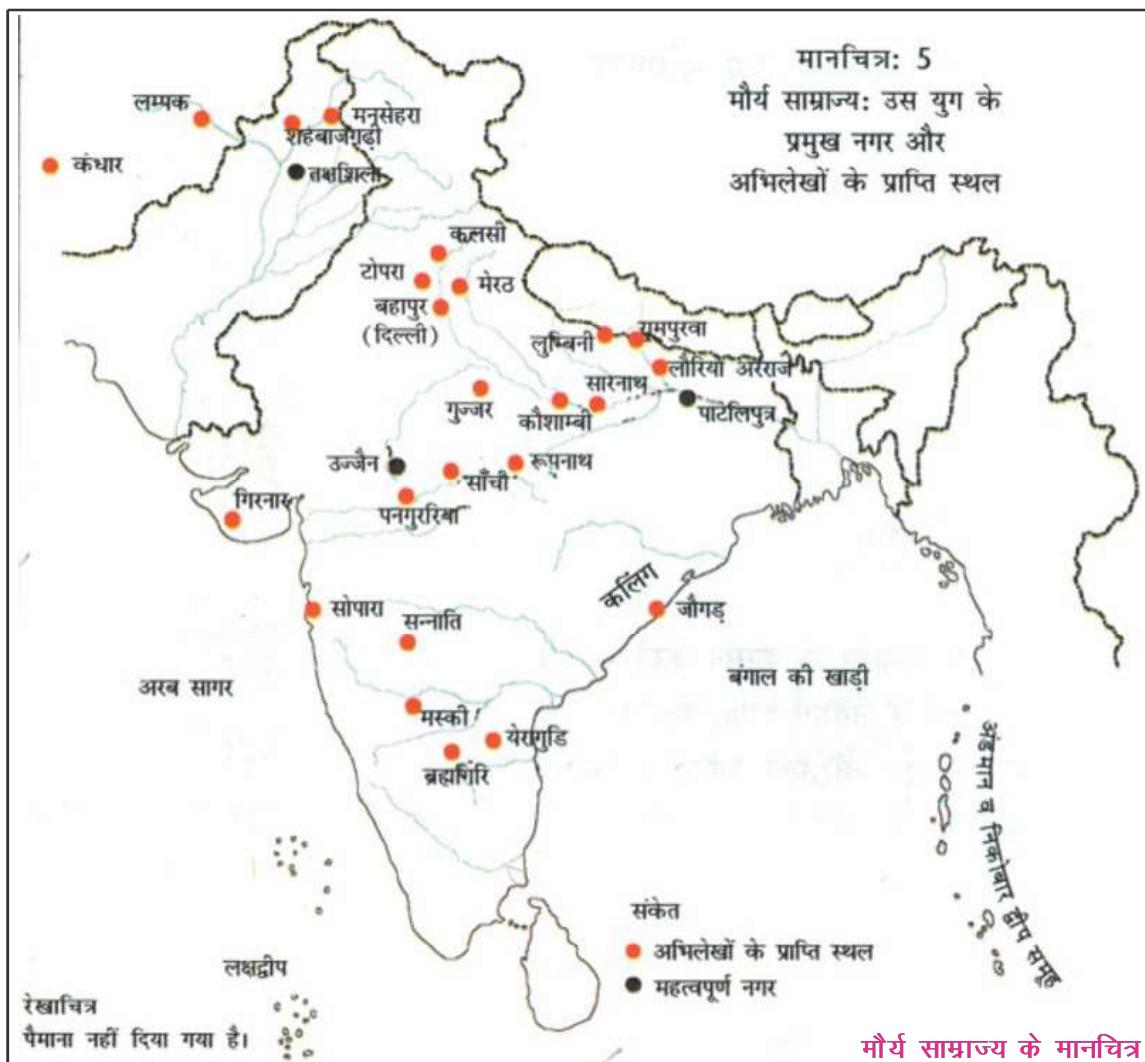
धीरे–धीरे मगध साम्राज्य के अधीन होते जा रहे थे। मगध का राज्य दूसरे राज्यों को सैन्य विजय एवं वैवाहिक संबंधों द्वारा अपने में मिलाकर बड़ा होता जा रहा था। 273 ई0पूर्व अपने पिता बिंदुसार के बाद अशोक मगध साम्राज्य का सम्राट बना। इसके साम्राज्य की राजधानी (आज का पटना) पाटलिपुत्र थी।

जब राज्य बहुत बड़ा हो जाता है तब उसे साम्राज्य कहते हैं अशोक जिस साम्राज्य पर शासन करता था उसकी स्थापना उसके दादा चन्द्रगुप्त मौर्य ने आज से लगभग 2300 वर्ष पहले की थी।

इसके साम्राज्य में बहुत सारे नगर थे। (मानचित्र 1 में इन नगरों को काले बिंदुओं में दिखाया गया है) तक्षशिला, उत्तर पश्चिम में मध्य एशिया के लिए आने जाने का मार्ग था। उज्जैन उत्तरी भारत से दक्षिणी भारत जानेवाले रास्ते में पड़ता था। नगरों में व्यापारी, सरकारी अधिकारी और शिल्पकार रहा करते थे। साम्राज्य के अलग–अलग क्षेत्रों में बसने वाले लोगों के खान–पान, पोशाक आदि में भिन्नता थी।

मौर्य साम्राज्य का मूल क्षेत्र नंद साम्राज्य का क्षेत्र था जिस पर चन्द्रगुप्त मौर्य ने अधिकार किया था। इसमें उत्तर और मध्य भारत का मुख्य भाग शामिल था। स्वयं चन्द्रगुप्त ने पश्चिमोत्तर में गंधार एवं कश्मीर का क्षेत्र, पश्चिम में सौराष्ट्र एवं दक्षिण में कर्नाटक तक विजय अभियान किया था। इस विशाल साम्राज्य में अशोक ने कलिंग का क्षेत्र समाहित किया लेकिन इसके बाद उसने युद्धों का परित्याग कर कल्याणकारी उपायों से शासन चलाने का निर्णय लिया।

साम्राज्य का प्रशासन :

बच्चों, अभी आपने देखा कि अशोक एक विशाल साम्राज्य का सम्राट था। इतने बड़े राज्य पर अकेले शासन करना आसान नहीं था इस विशाल साम्राज्य के प्रशासन के विषय में भी समझना आवश्यक है।

प्रशासनिक कार्य में राजा की सहायता के लिए अनेक उच्च पदाधिकारी (अमात्य) और मंत्री रहते थे। पुरोहित धार्मिक कार्यों में राजा को सहयोग देते थे। राज्य के खजाने की

देखरेख कोषाध्यक्ष करते थे। समाहर्ता अथवा राजस्व संग्रहकर्ता का काम कर इकट्ठा करना होता था। आय का मुख्य स्रोत जमीन से मिलनेवाला कर (भू–राजस्व) था। यह कुल उत्पादन का 1/6 भाग या 1/4 भाग होता था। संदेशवाहक एक जगह से दूसरे जगह घूमते रहते थे और राजा के 'जासूस' अधिकारियों की क्रिया–कलापों पर नजर रखते थे।

मौर्य साम्राज्य के भीतर कई छोटे–छोटे क्षेत्र या प्रांत थे। इनमें चार प्रांत मगध, तक्षशिला, उज्जैन एवं स्वर्णगिरी प्रमुख थे। अशोक अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से शासन करता था। इन नगरों और उसके आस–पास के इलाकों की देखभाल राजकुमार करते थे। प्रांतों को जिलों में विभाजित किया गया था। इन जिलों की देखभाल स्थानिकों एवं गांवों की देखभाल गांव के मुखिया, जिन्हें 'ग्रामिक' कहा जाता था, के द्वारा की जाती थी। प्रत्येक गांव में अधिकारियों का एक दल होता था जो गांव के लोगों तथा पशुओं का लेखा–जोखा रखता था और करों की वसूली करके बड़े अधिकारियों तक पहुंचाता था। नगर का प्रशासन परिषद और उसकी छह समितियां देखती थीं, जिनके अधीन अलग–अलग विभाग होते थे।

न्याय प्रशासन के क्षेत्र में साम्राज्य का सबसे बड़ा न्यायाधीश सम्राट होता था। नगरों तथा गाँवों में अलग–अलग न्यायालय थे। बहुत से मामले साधारण पंचायतों द्वारा देखे जाते थे। नीचे के न्यायालयों के निर्णय के विरुद्ध ऊपर के न्यायालयों में अपील करने का नियम था। सम्राट चाहता था कि न्यायधीश जहाँ तक संभव हो अपने फैसलों में और दंड देने में उदारता बरतें।

अशोक ने अपने शासन को अधिक मानवीय बनाने के लिए प्रजा हित के लिए अनेक कार्य किए। उसने मनुष्यों एवं पशुओं के लिए चिकित्सालय खुलवाए, जहाँ गरीबों की निःशुल्क चिकित्सा प्रदान की जाती थी और उन्हें औषधियाँ भी उपलब्ध करायी जाती थीं। उसने सड़क के किनारे पेड़–लगावाए ताकि मनुष्यों एवं पशुओं को छाया मिल सके। इसके साथ ही जगह–जगह पर कुएँ भी खुदवाए गए, जहाँ यात्रियों के सुख सुविधा के लिए उचित प्रबंध प्रशासन की तरफ से किया जाता था।

अशोक के शासन व्यवस्था द्वारा किए गए प्रजाहित के कार्यों की तुलना आज की शासन व्यवस्था से करें।

भारत में आज जहाँ उड़ीसा राज्य है, वहाँ सम्राट अशोक के समय कलिंग नाम का राज्य था। (मानचित्र 1 को देखिए) अशोक ने कलिंग पर चढ़ाई की। घमासान युद्ध हुआ। कलिंग के लोग हार गए। युद्ध में हजारों सैनिक और नागरिक मारे गये। अनेक स्त्री, बच्चे बेसहारा हुए। युद्ध जीतकर भी अशोक का मन दुःख से भर गया। उसने सोचा युद्ध से लोगों को दुःख पहुँचता है। इसलिए वह युद्ध छोड़कर अब लोगों की भलाई का काम करेगा। उसने अपने विचारों को संदेश के रूप में चट्टानों पर खुदवाए।

सम्राट अशोक के शिलालेख एवं उसका एक अंश

पत्थर की चट्टानों पर अंकित अशोक के अभिलेखों की संख्या सबसे अधिक है। अपने राज्य के रोहतास जिले के अन्तर्गत सासाराम से दो मील पूर्व चन्दन पीर नामक पहाड़ी पर अशोक के शिलालेख आज भी दर्शनीय है। अशोक ने अपने अभिलेखों में खुदवाया कि

'राजा बनने के आठ साल बाद मैंने कलिंग युद्ध को जीता, इससे मुझे बहुत दुःख हुआ। यह क्यों ? जब एक आजाद जनपद हराया जाता है, वहां लाखों लोग मारे जाते हैं और बंदी बनाकर अपने जनपद से बाहर निकाल दिए जाते हैं। वहाँ रहने वाले ब्राह्मण, भिक्षु मारे जाते हैं।''

ऐसे किसान जो अपने बंधु–मित्रों, दास और मजदूरों से नम्रतापूर्ण बर्ताव करते हैं – वे भी युद्ध में मारे जाते हैं और अपने प्रियजनों से बिछुड़ जाते हैं।

इस तरह हर तरह के लोगों पर युद्ध का बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे मैं दुःखी होता हूँ। इस युद्ध के बाद मैंने मन लगाकर धर्म का पालन किया है और दूसरों को यही सिखाया है।

मैं मानता हू कि धर्म, व्यवहार से जीतना युद्ध से जीतने से बेहतर है। मैं इन बातों को खुदवा रहा हूँ ताकि मेरे पुत्र और पौत्र भी युद्ध करने की बात न सोचें।''

अशोक का धम्म (धर्म)

> ‘धम्म’ संस्कृत शब्द ‘धर्म’ का प्राकृत रूप है।

अशोक ने जिस धम्म का रूप संसार के सामने रखा उसमें कई अच्छी बातें निहित थीं। अशोक अपने धम्म के माध्यम से उन आदर्शों में विश्वास रखता था जो मनुष्य को शांतिपूर्ण और सदाचारी बना सकते हैं। अशोक के धम्म में न तो कोई देवी–देवता थे और न ही उसमें कोई व्रत, उपवास या यज्ञ करने की बात कही गई थी। वह महात्मा बुद्ध के उपदेशों से काफी प्रभावित था।

> भाब्रु अभिलेख से अशोक का बौद्ध धर्मावलम्बी होना और धम्म तथा संघ में विश्वास करने के संबंध में जानकारी मिलती है।

अशोक के साम्राज्य में अनेक धर्मों के मानने वाले लोग रहते थे। अशोक सोचने लगा था कि सारे धर्म के लोग आपस में मिलकर रहें। उसके धर्म का सबसे बड़ा सिद्धांत यह था कि बड़ों का आदर किया जाना चाहिए और उनकी आज्ञा का पालन किया जाना चाहिए। बड़ों को भी अपने छोटों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। अशोक के धम्म में अहिंसा और दान का भी बड़ा महत्व है। अपने इस धम्म के संदेशों को उसने शिलाओं और स्तम्भों पर खुदवाए। आइए! अशोक के कुछ संदेशों का हिन्दी अनुवाद पढ़ें।

1. ‘‘यहाँ किसी जीव को मारा नहीं जाएगा और उसकी बलि नहीं चढ़ाई जाएगी। पहले राजा की रसोई में सैकड़ों जानवर रोज मांस के लिए मारे जाते थे। पर अब सिर्फ तीन जानवर मारे जाते हैं, दो मोर और एक हिरण। ये तीन जानवर भी भविष्य में नहीं मारे जाएँगे।
2. ‘‘लोग तरह–तरह के अवसरों पर तरह–तरह के संस्कार करते हैं। जब बीमार पड़ते हैं, जब लड़के–लड़कियों की शादी होती है, जब बच्चे पैदा होते हैं, जब यात्रा पर निकलते हैं आदि। महिलाएं खास कर बहुत से ऐसे बेमतलब के संस्कार करती हैं।

   ऐसे धार्मिक संस्कारों को करना तो चाहिए पर इनसे मिलने वाला लाभ कम ही है। कुछ संस्कार ऐसे होते हैं जिनसे ज्यादा फल मिलता है। वे

क्या है ? वे है। गुलामों और मजदूरों से नम्रता से व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना, जीव–जन्तुओं से संयम से व्यवहार करना, ब्राह्मणों और भिक्षुओं को दान देना आदि।

3. "अपने धर्म के प्रचार में संयम से बोलना चाहिए। अपने धर्म के गुणों को बढ़ा–चढ़ा कर कहना या दूसरे धर्मों की बुराई करना दोनों गलत है। हर तरफ से–हर वक्त दूसरे धर्मो का आदर करना चाहिए।

"अगर कोई अपने धर्म की बड़ाई करता है और दूसरे धर्मों की बुराई करता है तो असल में वह अपने धर्म को ही नुकसान पहुँचाता है। इसलिए एक–दूसरे के धर्म की मुख्य बातों को समझना और उनका सम्मान करना चाहिए।

अशोक के इन तीन संदेशों में आप किससे ज्यादा प्रभावित हुए और क्यों? वर्ग में मित्रों से चर्चा किजीए।

अशोक ने अपने अधिकारियों को यह निर्देश दिया कि वे इन संदेशों को उन लोगों को भी पढ़कर सुनाए जो खुद पढ़ नहीं सकते हैं।

वर्तमान जहानाबाद जिले के बराबर पहाड़ी की तीनों गुफाओं की दीवारों पर अशोक के लेख उत्कीर्ण मिले हैं। इसमें अशोक द्वारा आजीवक सम्प्रदायक के साधुओं के आवास के लिए गुफा दान में दिए जाने का विवरण सुरक्षित है।

उसकी राजाज्ञाए(संदेश) विभिन्न लिपियों में लिखी गई है। अधिकांश राजाज्ञाएं ब्राह्मी लिपि में हैं। उस समय भारत के अधिकांश भूभाग में इसी लिपि का प्रचलन था।
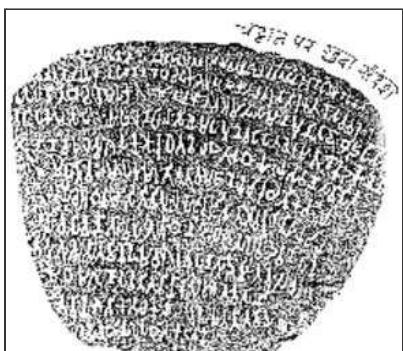
1837 ई0 में जेम्स प्रिंसेप नामक अंग्रेज विद्वान ने सर्वप्रथम ब्राह्मी लिपि को पढ़ा।

ब्राह्मी लिपि में चट्टान पर खुदा संदेश

ब्राह्मी लिपि के कुछ अक्षरों में अपनी पहचान के अक्षर को ढूंढिए।

अशोक ने अपने संदेशों को दूसरे देशों में भी पहुँचाया। उसके अधिकारी मिस्र, यूनान, बर्मा आदि देशों में गए। अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा के नेतृत्व में अधिकारियों का एक दल श्रीलंका भेजा।

शेरों वाला स्तंभ

अशोक की राजाज्ञाएँ चट्टानों के साथ–साथ बलुआ पत्थर के ऊँचे स्तंभों पर भी खोदी गयी हैं। स्तंभों पर की गई पॉलिश आज भी शीशे की तरह चमकती है। प्रत्येक स्तंभ के शीर्ष पर हाथी, सांड़ या सिंह की प्रतिमा बनायी गई थी।

सारनाथ के स्तंभ के शीर्ष पर चार सिंह बनाए गए थे। 26 जनवरी, 1950 को जब गणतंत्र बना तो चार सिंहों की इस बनावट को राष्ट्रीय चिह्न के रूप में स्वीकार किया गया। भारत के राष्ट्रीय चिह्न में एक गोलाकार शीर्ष फलक पर एक के पीछे एक बैठे चार सिंहों की आकृति है (चित्र में चौथा सिंह दिखाई नहीं देता है)। जिसके मध्य में एक चौबीस तिलियों से युक्त चक्र (पहिया) है इसके शीर्ष पर एक हाथी, एक दौड़ते घोड़े, एक सांड़ तथा एक सिंह की ऊँची उभार युक्त आकृति अंलकृत है जो मध्यवर्ती चक्र द्वारा विभाजित है। चिह्न के नीचे की ओर **'सत्यमेव जयते'** देवनागरी लिपि में अंकित है, अर्थात् – 'सत्य की ही विजय होती है। बिहार के ही चम्पारण जिले में रधिया ग्राम के निकट अरेराज नामक स्थान पर लौरिया, अरेराज स्तंभ दर्शनीय है।

अशोक चक्र को तिरंगे के अलावा आप कहाँ–कहाँ देखते हैं ? चर्चा करें।

अशोक के शासनकाल की कुछ अन्य कलाकृतियाँ

बिहार के रामपुरवा में मिले अशोक स्तंभ का हिस्सा। अभी इसे राष्ट्रपति भवन में रखा गया है।

इस प्रकार आपलोगों ने सम्राट अशोक के साम्राज्य विस्तार, शासन व्यवस्था, न्याय प्रणाली एवं उसके धर्म में निहित तथ्यों को जाना और समझा।

आपने कई राजाओं के बारे में पढ़ा होगा। क्या अशोक आपको इन सबसे अलग दिखता है? चर्चा करें।
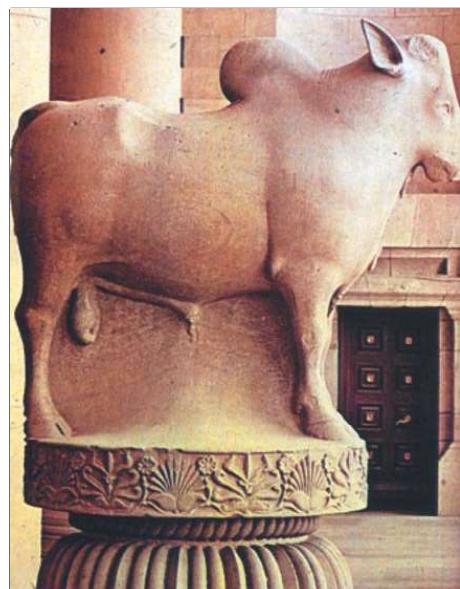
बिहार के चम्पारण जिले मठिया नामक ग्राम के निकट लौरिया, नन्दनगढ़ का स्तंभ चित्र

अभ्यास

आओ याद करें :

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(क) सम्राट अशोक कहाँ का शासक था ?

(I) काशी (ii) मगध

(iii) वैशाली (iv) कलिंग

(ख) किसके उपदेश ने सम्राट अशोक को प्रभावित किया ?

(i) महावीर (ii) महात्मा बुद्ध

(iii) कन्फयूसियस (iv) ईसा मसीह

(ग) अशोक के साम्राज्य में प्रशासन का उच्च पदाधिकारी होता था?

(i) ग्रामिक (ii) समाहर्ता

(iii) पुरोहित (iv) अमात्य

(घ) किस युद्ध को जीतने के बाद अशोक का मन दुःख से भर गया ?

(I) तक्षशिला (ii) कलिंग

(iii) उज्जयिनी (iv) सुर्वणगिरी

(ड़) सर्वप्रथम ब्राह्मी लिपि को किसने पढ़ा ?

(i) जेम्स प्रिंसेप (ii) हेनरी

(iii) जेम्समिल (iv) बेंथम

2. निम्नलिखित सही वाक्यों के आगे (✓) व गलत वाक्यों के आगे ( ) का चिह्न लगाओ।

(i) तक्षशिला उत्तर–पश्चिम और मध्य के लिए आने–जाने का मार्ग था।

(ii) सम्राट अशोक ने अपने संदेश पुस्तकों में लिखवाए थे।

(iii) कलिंग बंगाल का प्राचीन नाम था।

(iv) अशोक के धम्म में पूजा–पाठ करना अनिवार्य था।

(v) 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप नामक अंग्रेज विद्वान सर्वप्रथम ब्राह्मी लिपि को पढ़ा।

(vi) अशोक के प्रशासन में प्रांतों को जिलों में बांटा गया था।

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में दीजिए।

(i) सम्राट अशोक की राजधानी कहां थी?

(ii) आज कलिंग भारत के किस राज्य में है?

(iii) अशोक के धम्म में निहित अच्छी बात को लिखें?

(iv) राजस्व संग्रहकर्ता के क्या कार्य थे?

(v) भारत का राष्ट्रीय चिह्न कहां से लिया गया है।

(vi) अशोक के ज्यादातर अभिलेख किस भाषा में लिखे गये हैं।

4. अशोक के धम्म में निहित मानवीय मूल्यों को लिखें।

5. आओ चर्चा करें–

(i) अशोक ने अपने विचार प्राकृत भाषा में ही क्यों खुदवाए?

(ii) अशोक के प्रशासन की कौन–कौनसी बातें आज के प्रशासन में भी देखने को मिलती हैं। चर्चा करें?

(iii) अशोक अपने से पहले आने वाले राजाओं से किन बातों में अलग लगते हैं?

6. आओ करके देखें–

(i) उन वस्तुओं की सूची बनाओ जिन पर अशोक चक्र आपको मिलता है?

(ii) अशोक के धम्म में कौन–कौन बातों को जोड़ना चाहेंगे?

(iii) पृष्ठ 86 पर अंकित मानचित्र को देखकर बिहार में अशोक से जुड़े अभिलेखों की सूची बनाइए।